CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किञ्जल्क—कणिका:

—किञ्जल्क:

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किञ्जल्क-कणिकाः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुस्तक नाम—किञ्जल्क कणिकाः
भाषा—देववाणी छाया नेपाली च श्रीराम शीर्षक स्तवस्य
रचनाकार—"किञ्जल्कः"
प्रकाशक—भैषज्य सदनम् पोखरा (नेपाल)
मुद्रक—विष्णु शंकर प्रेस (वाराणसी)
प्रथम संस्करणम्—१००० प्रति संख्यकम्
सर्वाधिकार—लेखकाधीनः
प्रकाशन समय—राम नवमी (वि० सं० २०४०)
मूल्यम्—एक रुप्यकम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुक्रमणिका

अभिलाषः	
समर्पणम्	
शुभाऽऽशंसा	
मङ्गलम्	३
रामः	३
श्रीरामः (नेपाली छाया व)	४
राम (नेपाली)	१६
शिवाऽष्टकम्	१७
पुष्पाञ्जलिः	१९
महेशस्तवपञ्चकम्	१९
श्रीकृष्ण ! गोविन्द !	२१
श्रीसूर्यः	२५
देवि !	२५
कालिका	२५
विश्वेश्वरि !	२६
रुद्राणि !	२७
जगदम्बिके !	२७
अश्वत्थस्तवकषट्कम्	२७
कौपीनपञ्चकम्	२९

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अभिलाषः

अन्तर्हृदुत्थ - भगवत्परकाश्च भावा
निष्कल्मषाय प्रभवेयुरसंयतानाम्
भक्तिं परां च परमात्मनि प्रीतिमास्था
मास्थापयेयुरिति मे परमोऽभिलाषः

यन्मे कृतित्वमतिमन्दमतेश्च गृणा-
मुद्बोधयेद् हृदि प्रसुप्त - कवित्व - भावान्
वागीश्वरी-सदन-प्राङ्गणिके प्रफुल्लं
नित्यं नवं प्रचयमेतु सुगन्धि पुष्पम्

-किञ्जल्कः

गो – देवता – विप्र – पितृ – प्रधानो
वेदा s नुसारा ss चरण–व्यवस्थः
परेहलोका s नुगतित्व – मुक्ति –
भुक्ति-प्रदः शाश्वत " आर्य-धर्मः "

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

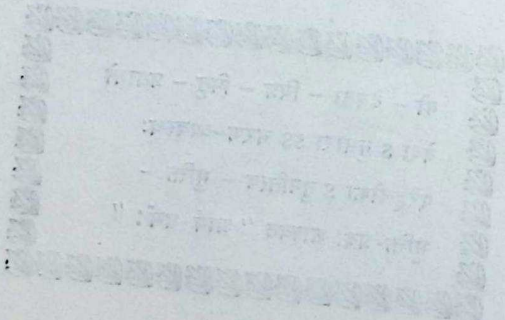

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समर्पणम्

ज्ञानयज्ञैकनिष्ठानां रेग्मीवंशविभूषिणाम्
पूज्यानां बन्दनीयानां विदुषां पुण्यकर्मणाम्
स्व० श्री शिवकुमाराणां गुरूणां पुण्य-संस्मृतौ
समर्पयामि "किञ्जल्क-कणिका" भक्तिपूर्वकम्

●

—किञ्जल्कः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

—शुभाऽऽशंसा—

सततं कीर्तनीयत्वाददुष्टपुनरुक्तताः
अभीष्टदेवसन्तुष्ट्याऽनिष्टमार्गनिरोधिकाः

इमाः किञ्जल्ककणिका गोपाल काननोद्गताः
कीराणामिव धीराणामात्मतृप्तिमभीप्सताम्

अनुशीलयतां नित्यं मोदाय प्रभवन्त्विति
आशास्ते परमप्रीतो गङ्गाधरपराजुलिः

पोखरा
२०३९।११।१७

विशेषकम्
विद्वद्वर पं० गङ्गाधर शास्त्री पराजुलिः
सम्प्रति—केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ प्रमुखः
दाङ् (नेपाल)

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मङ्गलम्—

श्रीगणेशाय देवाय नमो मङ्गल मूर्तये
विघ्न बाधाऽवरोधाय नमोऽभीष्टाऽर्थ सिद्धये

—❀—

रामः

श्रीरामः सुख-शान्तिदो भवतु मे
रामं स्मरेयं सदा
रामेण प्रतिबिम्बितं भवतु हृद्
रामाय नित्यं नमः
रामात् तापत्रयं विनश्यति ध्रुवं
रामस्य सृष्टिस्थिती
रामे भक्ति रगाधमस्तु विपदो
हे राम ! संरक्ष माम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्री राम !

(मूलम्)

श्रीरामचन्द्र करुणाऽर्णव राघवेन्द्र
श्रीराम रावण-निबर्हण सत्यसन्ध
श्रीजानकी रमण राम मनोऽभिराम
श्रीकोशलेन्द्र कुलचन्द्र नतोऽस्मि राम

साकेतनाथ रघुनन्दन दीननाथ
सद्भक्ति भाव पर सान्द्र दयाऽऽर्द्र चेतः
दुर्दान्तदैत्य दलदर्प विमर्द दक्ष
भो भक्तवत्सल सभक्ति नमामि राम

सुश्यामल द्युतिमदुत्तम रामभद्र
श्रीजानकीश रघुवंशवराऽवतंस
अत्याधुनिक्य परमाणविकाऽस्त्र शस्त्र
संहार भीतिमवनेर्हर रामराज

आनन्दकन्द भगवन्नवधेश राम
संसार त्रास हरणार्थ समर्थ राम
हिंसां घृणां च परिमार्ज्य हृदः समूलं
संस्थाप्यतामिह पुनर्नव राम राज्यम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम !

(छाया)

श्रीरामचन्द्र करुणाऽर्णव राघवेन्द्र
सत्य प्रतिज्ञ हत राक्षस राज राम
श्रीजानकी-रमण राम मनोऽभिराम
श्रीकोशलेन्द्र कुलचन्द्र प्रणाम राम

साकेतनाथ रघुनन्दन दीननाथ
सद्भक्ति युक्त जनमा अति प्रीति युक्त
दुर्दम्य दानव घमण्ड बिथोल्न दक्ष
हे भक्तवत्सल सभक्ति प्रणाम राम

श्रीराम श्यामल रघूत्तम रामभद्र
श्रीजानकीश कुलभूषण भूपतीन्द्र
अत्यन्त आधुनिक आणविकाऽस्त्र जन्य
संहार त्रास जनको हर रामराज

आनन्दकन्द भगवन् अवधेश राम
संसार त्रास हरणार्थ समर्थ राम
हिंसा घृणा हृदयबाट समूल मास
संस्थापना गर यहाँ नव राम राज्य

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सीता समेत रघुवीर विराजमान
दीनाऽऽर्तनाद परिहार दृढ़ प्रतिज्ञ
कालेऽन्तिमे मम मनोरममाण राम
श्रीराम नाम रटतोऽस्तु चिरं विरामः

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भय-भञ्जन राम राम
श्रीराम भक्त जन-रञ्जन राम राम
श्रीराम सादर महं प्रणमामि राम

श्रीराम राम रघुपुङ्गव राम राम
श्रीराम राम करुणाकर राम राम
श्रीराम भग्न भव बन्धन राम राम
श्रीराम राम रघुराज नमामि राम

श्रीराम राम परमेश्वर राम राम
श्रीराम राम जगदीश्वर राम राम
श्रीराम सज्जन मनोरम राम राम
श्रीराम प्राञ्जलिरहं प्रणमामि राम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सीता समेत रघुवीर विराजमान
दीनाऽऽर्तनाद हरणार्थ दृढ प्रतिज्ञ
प्राणान्तको घिटि घिटी बिच "राम राम"
रट्दै शरीर म बिसाउन-पाउँ राम !

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भय-भञ्जन राम राम
श्रीराम भक्त जन रञ्जन राम राम
श्रीराम सादर प्रणाम छ राम राम

श्रीराम राम रघुपुङ्गव राम राम
श्रीराम राम करुणाकर राम राम
श्रीराम राम भवबन्धन छिन्न राम
श्रीराम राम रघुराज प्रणाम राम

श्रीराम राम परमेश्वर राम राम
श्रीराम राम जगदीश्वर राम राम
श्रीराम सन्त जन मोहन राम राम
श्रीराम राम कर जोरि प्रणाम राम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम राम नव नीरद नील राम
श्रीराम राम हनुमत्प्रिय राम राम
श्रीराम भक्त हित तत्पर राम राम
श्रीराम राम भगवन् प्रणमामि राम

श्रीराम राम पुरुषोत्तम राम राम
श्रीराम सत्य शिव सुन्दर राम राम
श्रीराम दाशरथ दिव्य यशोऽभिराम
श्रीराम राम सततं प्रणतोऽस्मि राम

श्रीराम राम करुणा परिपूर्ण राम
श्रीराम राम शबरी प्रिय राम राम
श्रीराम राम शरणाऽऽगत पाल राम
श्रीराम राम दलितेश नमामि राम

श्रीराम लोक मत मान्य नृपेन्द्र राम
श्रीराम राम गुहराज घनिष्ठ राम
श्रीराम पुण्यधन सुन्दरनेत्र राम
श्रीराम पापहर राम नमामि राम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम राम नव नीरद नील राम
श्रीराम राम हनुमत्प्रिय राम राम
श्रीराम भक्त हित उत्सुक राम राम
श्रीराम राम भगवन् छ प्रणाम राम

श्रीराम राम पुरुषोत्तम राम राम
श्रीराम सत्य शिव सुन्दर राम राम
श्रीराम दाशरथ झल्मल कीर्ति राम
श्रीराम राम छ प्रणाम सदैव राम

श्रीराम राम करुणा परिपूर्ण राम
श्रीराम राम शवरी प्रिय राम राम
श्रीराम राम शरणागत पाल राम
श्रीराम राम दलितेश प्रणाम राम

श्रीराम लोकमत मान्य नृपेन्द्र राम
श्रीराम राम गुहराज घनिष्ठ राम
श्रीराम पुण्यधन सुन्दर नेत्र राम
श्रीराम राम हर पाप प्रणाम राम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम दुर्बल बलोत्तम राम राम
श्रीराम दैत्य दल निर्दल राम राम
श्रीराम धर्म्म परिपालक राम राम
❀श्रीमत्पदाऽब्ज निभृत भ्रमरत्वमीहे

श्रीराम सङ्कट विखण्डन राम राम
श्रीराम राम परिणाम सुखाऽर्ह राम
श्रीराम नित्य नव शान्तिद राम राम
श्रीमत्पदाऽम्बुजमिलिन्द पदं समीहे

श्रीराम राम नव मङ्गल दीप्त राम
श्रीराम दुःस्थिति नियामक राम राम
श्रीराम कोशल नरेश्वर राम राम
श्रीमत्पदाऽब्ज युगलं प्रणमामि राम

श्रीराम निर्गुण निरञ्जन राम राम
श्रीराम चिद्घनसुखाऽनुभवाऽविराम
श्रीराम तारक सनातन राम राम
श्रीराम राम प्रणव प्रणमामि राम

❀श्रीमत्पदाऽम्बुज निमग्न मलित्वमीहे

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम दुर्बल बल प्रभु राम राम
श्रीराम दैत्य दल मर्दन राम राम
श्रीराम धर्मपरिपालक राम राम
होउं म राम पदपद्म निमग्न भृङ्ग

श्रीराम सङ्कट विमोचन राम राम
श्रीराम राम परिणाम सुखात्म राम
श्रीराम नित्य नव शान्तिद राम राम
चाहन्छु बन्न प्रभुको पदपद्म भृङ्ग

श्रीराम राम नव मङ्गल झल्ल राम
श्रीराम दुःस्थिति नियन्त्रक राम राम
श्रीराम कोशल नरेश्वर राम राम
श्रीराम ढोग्छु प्रभुको पद पद्म युग्म

श्रीराम निर्गुण निरञ्जन राम राम
श्रीराम चित्सुख निरन्तर प्राप्ति धाम
श्रीराम तारक सनातन राम राम
ॐकार रूप प्रभु राम प्रणाम राम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम मानस सुनिर्मल राम राम
श्रीराम रश्मि परिमण्डल राम राम
श्रीराम जन्म मरण क्रम मुक्त राम
श्रीराम भक्ति परितुष्ट नमामि राम

श्रीराम राम रघुनायक राम राम
श्रीराम राम सुखदायक राम राम
श्रीराम तापपरिहारक राम राम
राम त्वमेव शरणं मम राम राम

श्रीराम नाम मधुरं मधुरं जपामि
श्रीराम नाम मधुरं मधुरं भजामि
श्रीराम सुन्दरमहं मधुरं स्मरामि
श्रीराम मञ्जुलमहं मधुरं नमामि

नित्यं सुधेव हितकारि हि राम नाम
सत्यं शशीव सुखकारि च राम नाम
शान्ति प्रदायि नर जन्मनि राम नाम
मुक्ति प्रदायि नर जन्मनि राम नाम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीराम मानस सुनिर्मल राम राम
श्रीराम राश्रेम परिपुञ्जित राम राम
श्रीराम जन्म मरण क्रम मुक्त राम
श्रीराम भक्ति परितुष्ट प्रणाम राम

श्रीराम राम रघुनायक राम राम
श्रीराम राम सुखदायक राम राम
श्रीराम ताप परिहारक राम राम
मेरा त एक शरण प्रभु राम राम

मीठो मिठो जप म गर्दछु "राम राम"
मीठो मिठो भजन गर्दछु "राम राम"
मीठो मिठो स्मरण गर्दछु रामको म
मीठो मिठो प्रणति गर्दछु राममा म

साँच्चै सुधा सरि हितैषि छ राम नाम
आनन्द दायि छ शशी सरि राम नाम
यो जन्ममा सहज शान्तिद राम नाम
यो जन्ममा सहज मोक्षद राम नाम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रामं जपन्नविरतं समयं नयेयं
रामं भजन्ननु दिनं समयं नयेयम्
रामं स्मरन् सुमधुरं समयं नयेयं
रामं नमन् सविनयं समयं नयेयम्

राम त्वमेव मम हृन्मणि मध्य दीपो
राम त्वमेव मम जीवन केन्द्र चन्द्रः
राम त्वमेव मम नित्य समर्प्य ईशो
राम त्वमेव मम पूज्य प्रणम्य देवः

आदर्श राघव धनुर्धर धन्य राम
मूर्धन्य वीर रणधीर मनस्वि राम
एकान्त शान्त परिपूर्ण प्रसन्न राम
दिव्य प्रताप रघुनाथ मम प्रणामः

—•—

श्रीराम शीर्षकमिदं स्तवनं मनोज्ञं
प्रातः पठेद् यदि समर्पण भावनो यः
आजीवनं स सुख शान्ति समन्वितः स्याद्
देहाऽत्यये रघुपतित्वमुपेत्य मुक्तः

इति विञ्जलक कृतं "श्रीराम" स्तवनम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जप्दै बिताउंछु म जीवन "राम राम"
भज्दै बिताउंछु म जीवन "राम राम"
सम्झी बिताउंछु म जीवन रामलाई
ढ़ोग्दै बिताउंछु म जीवन रामलाई
श्रीराम नै हृदय मध्य मणि प्रदीप
श्रीराम नै सुखद जीवन केन्द्र चन्द्र
श्रीराम प्रेम सित नित्य समर्प्य ईश
श्रीराम भक्ति सित पूज्य प्रणम्य देव
आदर्श राघव धनुर्धर धन्य राम
मूर्धन्य वीर रणधीर मनस्वि राम
एकान्त शान्त परिपूर्ण प्रसन्न राम
दिव्य प्रताप रघुनाथ सदा प्रणाम

—०—

श्रीराम शीर्षक मनोरम प्रार्थना यो
पढ्ला समर्पित बनेर विहानमा जो
उल्लाइ जिन्दगि भरी सुख शान्ति मिल्ला
देहान्त वाद हरिमा मिलि मुक्त होला

किञ्जल्क कृत श्रीराम स्तव समाप्त

—०—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

"राम"

सम्पत्ति प्राप्ति न भए पनि भज्छु "राम"
सन्तान प्राप्ति न भए पनि भज्छु "राम"
आनन्द प्राप्ति न भए पनि भज्छु "राम"
कैवल्य प्राप्ति न भए पनि भज्छु "राम"

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवाऽष्टकम्

(स्तोत्रम्)

१—महाऽहिहाराय महेश्वराय
शर्वाय भर्गाय दिगम्बराय
चिता-रजो-धूसर-भासुराय
देवाऽधिदेवाय नमः शिवाय

—०—

२—डिमिड्-डिमिड्-मन्द्र-निनादिताय
महानटायाऽद्भुत-ताण्डवाय
व्यक्ताऽर्द्धनारीश्वर-शङ्कराय
नटाऽधिराजाय नमः शिवाय

—०—

३—पिनाकिने पाशुपताऽत्मकाय
कपालिने धूर्जटये मृडाय
कैलाशनाथाय वृष-ध्वजाय
हिमांशु-शुभ्राय नमः शिवाय

—०—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

४—तापाऽन्तकाय त्रिपुरान्तकाय
यज्ञाऽन्तकायाऽन्तककृन्तनाय
स्वयं महाकाल-कृपाऽऽलयाय
हराय रुद्राय नमः शिवाय

—०—

५—कपर्दिने शूल भृते भवाय
मृत्युञ्जयाय प्रमथाऽधिपाय
वृषाऽधिरुढाय जगद्धिताय
श्री नीलकण्ठाय नमः शिवाय

—०—

६—भागीरथी-निर्झर-मूर्धजाय
बालेन्दु-भालाय त्रिलोचनाय
सच्चिद्घनाऽऽनन्द-विभामयाय
ब्रह्म-स्वरूपाय नमः शिवाय

—०—

७—शार्दूल नागाऽजिन-सम्भृताय
स्मराऽरयेऽपाय-निवारणाय
श्रीवामदेवाय सुमङ्गलाय
सदाऽऽशुतोषाय नमः शिवाय

—०—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

८—अकारणायाऽपि च कारणाय
गुणाऽऽलयायाऽपि च निर्गुणाय
भयाऽऽवहायाऽपि भयाऽपहायाऽ
द्वैताय शान्ताय नमः शिवाय

—०—

९—निधाय नित्यं हृदि विश्वनाथं
शिवाष्टकं स्तोत्रमिदं पठेद् यः
स्वास्थ्यं चिरायुश्च सुखं समृद्धिं
सम्प्राप्य सोऽन्ते शिवतामुपेयात्

—०—

इति किञ्चल्क-कृतं शिवाऽष्टकं स्तोत्रम्

पुष्पाञ्जलिः

नमः शिवाय शान्ताय पार्वती प्रीतिमूर्तये
उत्पत्तिः स्थिति संहार हेतवे भूत-भूतये

०

महेश-स्तव-पञ्चकम् ✓

कलत्रपुत्रादिक बन्धु वर्गै
स्तिरस्कृते, वित्तवयोबलैश्च
क्षीणेऽतिशोकाऽऽकुलिते महेश !
त्वमेकमात्रं शरणं सदैव !

१

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मिथ्याऽभिलाषा परिपूर्त्य भावो–
द्वेगे, परद्रोहदवाऽग्निदग्धे,
स्वार्थाऽन्ध कूपाऽन्तरिते महेश !
त्वमेक मात्रं शरणं सदैव !

२

अनागतव्याधिविचिन्तनाया
मनागताऽऽपत्परिकल्पनायाम्
सदाऽतिभीते दलिते महेश !
त्वमेकमात्रं शरणं सदैव

३

व्यर्थप्रयत्ने विकले वियोगे
वैचित्यके दिग्भ्रमितेऽसहाये
नान्योऽस्ति मे कोऽपि च सान्त्वनाय
त्वमेकमात्रं शरणं महेश !

४

हर्षे विषादे च जयेऽजये च
मानेऽपमाने विभवे च दैन्ये
कालक्रमेण भ्रमतो ममेह :
त्वमेकमात्रं शरणं महेश !

५

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संस्थाप्य नित्यं हृदये महेशं
प्रातः पठेत् स्तोत्रमिदं पवित्रम्
आधिर्न तस्मिन्प्रभवेन्न रक्त-
चापस्य निम्नोन्नतता कदाऽपि

इति किञ्जल्ककृतं महेशस्तवपञ्चकम्

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! .....

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
अनन्त ! विश्वेश्वर ! विश्वमूर्ते !
तापत्रयात् त्वं परिपाहि लोकम् ।

१

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
न्यूट्रानणूर्जोऽस्त्र विनाश शङ्काऽऽ
तङ्कं निराकर्तुमिहाऽर्हसि त्वम्

२

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आक्रोशचिन्ता भयवैरभावान्
निरस्य विस्तारय पूर्णशान्तिम्

३

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
देहाऽभिमानो न धनाऽभिमानः
समुद्भवेच्चेतसि कर्हिचिन्नः

४

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
सुखे परेषां हृदयं प्रफुल्लेद्
दुःखे परेषां हृदय द्रवेच्च

५

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
परोपकारे सुमनस्कता स्यात्
पराऽपकारे विमनस्कता च

६

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
रुग्णे दरिद्रे विकलेऽसहाये
"सेवा हि धर्म" श्चरिताऽर्थमेतु

७

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
सुखे भवेन्निस्पृहता तथैव
दुःखेष्वनुद्विग्नमनस्कता च

८

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
सम्प्राप्नुयादास्तिकताऽभिवृद्धिं
सम्प्राप्नुयान्नास्तिकता निवृत्तिम्

९

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
स्यादिन्द्रियाणां विषये विरक्ति
रध्यात्मतत्वे त्वधिकाऽनुरक्तिः

१०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
प्रादुर्भवेच्चेतसि ज्ञानमेतत्—
"सत्यं खलु ब्रह्म जगद्धि मिथ्या"

११

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
दया दमो दानमिति प्रधानं
ध्येयं विधेय खलु जीवनेषु

१२

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
प्रयाणकाले सहसैव कण्ठात्
स्फुटी भवेत् तारक–"राम" नाम

१३

श्रीकृष्ण! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण! वासुदेव !
फले निरासक्तिरनेषणा च
समुद्भवेच्चेतसि मुक्तिहेतुः

४१

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे !
हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !
संसार चक्रे भ्रमतां जनानां
त्वमेकमात्रं शरणं "नमस्ते"

१५

नमः श्रीमद्भगवते वासुदेवाय विष्णवे
नमः श्रीपतये नित्यं संसारत्रासशान्तये

इति किञ्चलक्कृतं श्रीकृष्ण गोविन्द-स्तवनम्

श्री सूर्य्यः

चराचरजगत्सृष्टिहेतवेऽमिततेजसे
सूर्य्याय ग्रहराजाय नमः सहस्ररश्मये

देवि !

प्रचण्ड चण्डमुण्डादिदैत्यदर्प विमर्दिनि !
जय त्वं देवि ! चामुण्डे ! लोककल्याणकारिणि

कालिका

शुभं भवतु वैभवं भवतु दीर्घमायुर्बलं
स्वतन्त्रमुपभोग्यमस्तु सविधि स्वकीयं मतम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

न कोऽपि खलु निष्क्रियो न हि च वृत्तिहीनोजनो
न दुर्व्यसनमामयो न च परोपजीव्यं भुवि

१

भवत्वनतिसन्ततिः, प्रणयधन्यदाम्पत्यकं,
दिनानुदिनमुद्यमः प्रगतिसन्मुखी राष्ट्रियः,
सुभिक्षमनुपद्रवो, भवतु पूर्णशान्तिः सुखं,
परं जयतु कालिका प्रशममेतु दुष्कामना

विश्वेश्वरि !

हिमालयमनोरमावलिसमन्वितोपत्यका
विशाल वनसम्पदाऽऽवृतमहीभृताऽऽभूषिता
स्फुरन्मरकतप्रभा सघनशस्यधन्या धरा
परं विलसतु श्रिया तव भवानि ! दुर्गे ! सदा

२

तरङ्गततिसङ्कलोल्लससमुज्ज्वलो वारिधिः
स्थलं समृगतृष्णिकं क्वचिदनूपकं सैकतम्
चराऽचरजगच्च तद्वृतकलाकृतिः संस्कृतिः
परं विलसतु श्रियाऽभिनवयाऽम्ब ! विश्वेश्वरि !

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रुद्राणि !

अणूर्जोविस्फोटक्रमकलुषितव्योमवलयै
र्महासंहाराऽस्त्रैरुदणुजनविस्फोटघटकैः
सशङ्कः साऽऽतङ्कोऽनुदिनमसुरक्षामनुभव
न्निहाऽऽस्ते लोकस्तत्त्वमसि शरणं देवि जगताम्

१

ग्रहाऽऽकारश्चारश्चरति नभसि प्रक्षपणकं
महाद्वियान्तर्भित्सुविकसितमस्त्रं च निचितम्
जना रागद्वेषाऽऽवृतहृदयनेतृत्ववशगा
अतस्त्वं सम्भाव्याऽऽपदि सपदि रुद्राणि ! शरणम्

जगदम्बिके !

लोकेविश्वजनीनभावसुलभाऽऽकाङ्क्षा समुज्जृम्भतां
सर्वत्राऽभिनवंच्च जागरणमुत्साहः समुद्वर्धताम्
सौजन्यं सहकारता विलसताच्छान्तिः समृद्धिःसुखं
सम्पश्येज्जगदम्बिके ! जनगणः "सत्यं शिवं सुन्दरम्

अश्वत्थस्तवकषट्कम्

अश्वत्थ ! विष्णुत्वविभूतिमत्वात्
तापत्रयोत्सादन — हेतुकस्त्वम्

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

त्वत् प्रीतये निर्मलनीर – धारां
सश्रद्धमानम्य समर्पयेऽहम्
१

त्वमातपात् त्रायस एव लोकं
सन्तर्पसि स्वादुफलैश्च जीवम्
सुखाऽऽश्रयः कीटविहङ्गमानां
नमाम्यहं माङ्गलिकद्रुम ! त्वाम्
२

नमो धनच्छाय मनोरमाय
परोपकारार्थसमुद्भवाय
बुद्धत्वसम्प्राप्तिनिकायकाय
बोधिद्रुमत्वेन सुविश्रुताय
३

दुःस्वप्न-दुश्चिन्तनदारणाय
दुष्टग्रहाणां परिमार्जनाय
देवाऽभितुष्टयै पितृतर्पणाय
नमोऽस्तु तेऽश्वत्थ-महीरुहाय
४

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नमो नमस्तुभ्यमकिल्विषाय
नमो नमः स्वस्तिकशान्तिकाय
नमो नमो भूतहिते स्थिताय
नमो नमः पिप्पलपादपाय

५

अति प्रचण्डाऽऽतपशीत वृष्टि-
बाधानिरोधाय सदोद्यताय
चिरायुरारोग्य सुरक्षणाय
तपोऽनुचर्य्याय नमःशुभाय

६

इति किञ्जल्ककृतमश्वत्थस्तवकषट्कम्

श्री

कौपीन-पञ्चकम्

सत्यं खलु ब्रह्म जगद् वृथेति
सदाऽनुशोचन् विषये विरक्तः
विविक्त सेवी यतवाङ् मनस्कः
कौपीन धारी खलु भाग्य-शाली

१

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विहीन-तृष्णो विमलाऽन्तरङ्गो
निरन्तराऽऽनन्द निमग्न शान्तः
श्रीराम-नामाऽमृतकं पिबंश्च
कौपीनधारी खलु भाग्यशाली

२

मन्दाकिनी-नीर-पवित्र-तीर-
निबद्ध-पद्माऽऽसन एकनिष्ठः
सुनिश्चलोऽन्तर्मुख चित्तवृत्तिः
कौपीनधारी खलु भाग्यशाली

३

भ्रमन्नपि स्वं भवसृष्टिचक्रे
निर्लिप्तकः पद्मदलेऽम्बुतुल्यः
प्रसन्नमुद्रः सदयो विनम्रः
कौपीनधारी खलु भाग्यशाली

४

सत्येऽनुरक्तोऽपि गताऽनुरक्ति-
रध्यात्मचिन्ता निरतोप्यचिन्तः
कैवल्य कामोऽपि न कामकामी
कौपीनधारी खलु भाग्यशाली

५

—०—

किञ्जल्कः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal